

શ્રી જિન-સ્તપન

(મહારા છૈલ ભંવર કસુંબો પીવે)

મહારા નેમ પિયા ગિરનારી ચાલ્યા, મત કોઈ રોક લગાજ્યો
લાર લાર સંયમ મેં લેસ્યું, મત કોઈ પ્રીત બદાજ્યો .ટેક.

साज्जन त्यागो पापयुत, देख जगत व्यवहार,
राज ताज कुल संपदा, मनमें दया विचार;
भारा माथा में साथणिया, कोई मत सिंदूर लगाज्यो. १.

भोग रोगकी खान है, भोग नरक को द्वार,
जो ज्ञत्यो ईह भोग नें, तिर गयो भवदधि पार;
ओ मन भोली अनज्ञन, जोग की रीत निभाज्यो. २.

धन्य धन्य जिन जोग ले, द्वादशांग तप धार,
कर्म काट शिवपुर गये, नमों जगत हितकार;
यो नरभव को 'सौभाग्य' सज्जनी तप कर सझण बनाज्यो. ३.